प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 16 सितम्बर, 2017 को चिकित्सा विश्वविद्यालय के कलाम सेण्टर में **''गुड क्लीनिकल प्रैक्टिस-जी0सी0पी0 एवं मेडिकल इथिक्स''** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि मा0 चिकित्सा शिक्षा एवं प्राविधिक शिक्षा मंत्री श्री आशुतोष टण्डन जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वर्तमान समय में अलग-अलग तरह के वायरस अपना रूप निरंतर बदल रहे इस लिए निरंतर शोध होना बहुत ही जरूरी है। निरंतर शोध का ही परिणाम है कि वर्तमान में जेई की वैक्सीन का विकास हुआ और इससे हम प्रदेश के सभी बच्चों में 100 प्रतिशत टीकाकरण करने में सफल हो रहे है किन्तु इसका ही एक बदला रूप ए0ई0 है जिसका वैक्सीन अभी तक विकसित नही किया जा सका है। किसी भी शोध को मानव पर करने से पहले उसे जानवरो पर किया जाता था उसके लिए भी इथिक्स होता था किन्तु जब किसी शोध में मानव को लिया जा रहा हो उसमें उस की स्वैच्छिक सहमती परम आवश्यक है और सुरक्षा के सारे मानकों का पालन और अनुसंधान के नैतिकता का पालन बहुत जरूरी है। के0जी0एम0यू0 का दुनिया मे बहुत नाम है और ऐसे कार्यक्रम के0जी0एम0यू0 का नाम और रोशन करेंगे।

कार्यक्रम में चिकित्सा विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट जी ने कहा कि गुड क्लीनिकल गाइडलाइन की प्रैक्टिस में इथिकल कमेटी जुड़ी होती है। इस प्रकार हर मेडिकल संस्थान में एक इथिकल कमेटी की आवश्यकता है। कोई भी शोध तब किया जाना चाहिए जब उसकी आवश्यकता हो और आवश्यक शोध ही किया जाना चाहिए वो भी इथिकल गाइडलाइन के हिसाब से। शोध क्षेत्रिय जरूरतो और राष्ट्रीय जरूरतो के अनुरूप होना चाहिए शोध एक वैज्ञानिक जिम्मेदारी है जिसे वैज्ञानिक तरीके से करना जरूरी है। सभी शोध लिखित एवं डाक्यूमेंटेड होने चाहिए तथा जिस मरीज या व्यक्ति पर शोध किया जा रहा हो उसे उस शोध के सम्बंध में सम्पूर्ण जानकारी और उसकी स्वैच्छिक सहमती अति आवश्यक होती है। किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय में आई0सी0एम0आर0 के निर्देशों के अनुरूप एक इथिक्स कमेटी का गठन किया गया है। जिसकी फार्मल मीटिंग में ही आई0सी0एम0आर0 के निर्देशों के अनुरूप रिसर्च पब्लिकेशन को पास किया जाता है। यदि किसी मानव पर कोई भी शोध किया जा रहा हो तो उसमे चिकित्सक का होना आवश्यक है चाहे वो प्रश्नात्म शोध ही क्यो ना हो।

कार्यक्रम में बलरामपुर अस्पताल के निदेशक डॉ0 राजीव लोचन ने अपने उद्बोधन में कहा किसी भी बीमारी से बचाव उसके उपचार से बेहतर होता है। इसी तरह हमे ट्रॉमा से बचाव करना चाहिए। हम लोग ट्रॉमा से बचाव के उपर कुछ वर्क करें इसके लिए मै अपने साथ मिल कर काम करने के लिए के0जी0एम0यू0 का अह्वान करता हू। हमे सरकार को सुझाव देना होगा की रोड पर मोटर साइकील एवं कार का एक्सीडेण्ट कैसे कम करे। कोई भी रोड हमे दूसरी जगह पहुंचाने के लिए है ना कि अपना पौरूष दिखाने के लिए। आज मार्केट में इतनी उच्च पावर की मोटर बाईक आरही है कि पलक झपकते ही वो इतनी स्पीड पकड़ लेती है कि कभी कभी उनका कंट्रोल नही हो पाता है। इस तरह हमे लोगो को, सरकार को ट्रॉमा से बचाव व सेफ्टी मानकों को बताना होगा।

कार्यक्रम में डॉ0 आर0के0 गर्ग, विभागाध्यक्ष न्यूरोलॉजी विभाग एवं प्रभारी के0जी0एम0यू0 शोध संकाय ने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के समाप्ती के उपरांत हिटलर ने कई प्रयोग किया उनमें से एक प्रयोग मानव शरीर पर पर चरम तापमान का सिधे प्रयोग करके यह देखा गया कि मानव शरीर कितने उच्च और निम्न तापमान को सह सकता है। दुसरा प्रयोग बच्चो के शरीर को आपस में जोड़ने का प्रयास किया गया था। जिसमें बहुत सारे बच्चे ओर व्यक्तियों की जान चली गयी थी। इसके उपरांत शोध के लिए नैतिकता की गाइड लाइन बनाई गयी। रिसर्च इथिक मरीजो के सुरक्षा के लिए होती है । किसी भी रिसर्च में मरीज को अपनी स्वेच्छा से सामील होना चाहिए और यदि किसी रिसर्च में मरीज का नुकसान होतो उसे नहीं करना चाहिए।

कार्यक्रम में प्रो0 वीनिता दास ने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद थैलामाईड के प्रयोग से कई गर्भवतीयों को नुसान हुआ था बच्चे जो पैदा हुए उनमें किसी न किसी प्रकार की कमी थी। इसलिए किसी भी शोध का चिकित्सकीय परीक्षण करने से पहले उसके सुरक्षा और उसके मानको से परीचीत होना चाहिए।
कार्यक्रम में डा0 एस0एन0 शंखवार, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक के0जी0एम0यू0 ने कहा कि किसी भी कार्य को इथिक्स के अनुरूप करने मे सफलता मिलती है। हमारा शोध पत्र तबतक प्रस्तुत नही होगा जबतक की वो इथिकल कमेटी से पास न हुआ हो।
कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रो0 संदीप तिवारी के स्वगत उद्‌बोधन से हुआ।

प्रो0 नरसिंह वर्मा
संकाय प्रभारी मीडिया सेल
चिकित्सा संकाय, केजीएमयू

प्रो0 विभा सिंह
संकाय प्रभारी मीडिया सेल
दंत संकाय, केजीएमयू